DR. ANWAR ALAM

SEM-IV - PAPER-CC-VIII

Date:

Page No. 1

Q.1. Describe the Historiography and different Sources for the Study of the Mughal period.

प्रश्न। मुगलकालीन इतिहास लेखन एवं इस काल के अध्ययन के विभिन्न स्त्रोतों का विवरण दें।

उत्तर – डॉ ऑरनल्ड का मत है कि – "इतिहास का मुख्य उद्देश्य सभ्य मनुष्यों के वास्तविक जीवन और संस्थाओं की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक अवस्था का वर्णन करना है।" मुगलकाल के इतिहास की एक मुख्य विशेषता ठोस ऐतिहासिक घटनाएं हैं जो सत्य पर आधारित हैं और जिसकी सत्यता को परखने में सहायता प्रदान करते हैं ऐतिहासिक स्त्रोत, सल्तनतकालीन स्त्रोतों की लगभग सभी श्रेणियां मुगलकाल में भी उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त नई प्रकार की सूचनाएं भी मिलती हैं; जैसे दरबारी इतिहासकारों की रचनाएं क्षेत्रीय इतिहास से संबंधित रचनाएं आदि। मुगलकाल में एक पूर्णतः नई श्रेणी यूरोपीय यात्रियों के वृतांत के रुप में हैं। मुगलकालीन इतिहास लेखन की परंपरा भी सल्तनत काल से भिन्न है। सल्तनत काल के इतिहासकार ईरानी शैली और इस्लामी अतीत से प्रभावित रहे, मगर मुगल कालीन इतिहासकारों का दृष्टिकोण 'भारतीय' था। वे सामान्य इस्लामी जगत के इतिहास से अधिक हिंदुस्तान के इतिहास में अभिरुचि रखते थे। इसके अतिरिक्त मुगलकालीन इतिहास लेखन पर मंगोल परंपरा का भी गहरा प्रभाव था और आभिलेखीय सामग्री का इसमें अत्यधिक उपयोग हुआ। इसके साथ-साथ शासकों के अतिरिक्त सामंतों की भी जीवनियां इस काल में लिखी गई जो कि एक नई विशेषता है। मुगल-कालीन ऐतिहासिक स्त्रोतों में नई और पुरानी परंपराओं

का समावेश मिलता है जिन्हें निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

1. दरबारी इतिहासकारों की रचनाएं
2. दरबारी संरक्षण में लिखी गई रचनाएं
3. शासकों की आत्मकथाएं
4. सामान्य इतिहासकारों की रचनाएं
5. क्षेत्रीय इतिहास से संबंधित रचनाएं
6. सामंतों के जीवन वृतांत
7. प्रशासन से संबंधित रचनाएं
8. साहित्यिक रचनाएं
9. सूफी संतों से संबंधित रचनाएं
10. यूरोपीय यात्रियों के वृतांत

मुगलकाल में शासकों द्वारा अपने शासनकाल का अधिकृत इतिहास लिखने की परंपरा आरंभ हुई और इस प्रकार दरबारी इतिहास की रचना आरंभ हुई। इस नए प्रयोग का श्रेय अकबर को दिया जाएगा। उसने अपने शासनकाल की घटनाओं का प्रमाणिक वृतांत लिखने का अबुल फजल को आदेश दिया। यह रचना "अकबरनामा कही जाती है। इसमें प्राचीन काल से अकबर के शासनकाल तक का इतिहास वर्णित है। अकबर के शासनकाल के अंतिम दिनों में अबुल फज़ल की हत्या के कारण यह विवरण अधुरा रह गया था जिसे इनायतुल्लाह ने तकमीले अकबरनामा लिख कर पूरा किया।

अकबर द्वारा आरंभ की गई परंपरा को जहांगीर और शाहजहां ने बनाए रखा। उनके समय में भी दरबारी इतिहासकारों ने अधिकृत ऐतिहासिक रचनाएं लिखीं। मोतमिद खां ने "इकबालनामा-ए-जहांगीरी" की रचना की जबकि अब्दुल हमीद लाहौरी ने "बादशाहनामा" की रचना की। औरंगजेब के शासनकाल का

अधिकृत इतिहास "आलमगीरनामा" शीर्षक से मुहम्मद काज़िम ने लिखना आरंभ किया।

"अकबरनामा" की रचना का एक लाभदायक परिणाम यह भी हुआ कि हुमायूं और शेरशाह के शासनकाल का इतिहास भी संकलित किया गया ताकि उसके पूर्वगामी शासकों का इतिहास भी अकबरनामा में सम्मिलित हो सके। इस क्रम में हुमायूं के शासनकाल से संबंधित कुछ रचनाएं लिखी गई। जैसे गुलबदन बेगम का "हुमायूंनामा" जौहर आफ़ताब्ची की "तज़किरतुल वाकियात" आदि। दूसरी ओर शेरशाह के शासनकाल का अधिकृत इतिहास लिखने के लिए अकबर ने अब्बास खां सर्वानी को आदेश दिया। इसके नतीजे में "तोहफाए अकबरशाही" अथवा "तारीखे शेरशाही" की रचना हुई।

मुगल शासकों द्वारा आत्मकथा लिखने के उदाहरण भी हमें मिलते हैं। मुगलों के पूर्वज तैमूर द्वारा अपने जीवन की मुख्य घटनाओं को लिखा गया था जो "मल्फूजाते तैमूरी" के नाम से प्रसिद्ध हैं। भारत के संदर्भ में बाबर ने अपनी आत्मकथा "तुजुकबाबरी" तुर्की भाषा में लिखी, जिसका फारसी अनुवाद "बाबरनामा" कहलाता है। इसमें बाबर के जीवन की मुख्य घटनाओं का वर्णन मिलता है। जहांगीर की आत्मकथा "तुजुके जहांगीरी" कहलाती है। यह फारसी भाषा में लिखी गई है।

इन रचनाओं के अतिरिक्त सामान्य इतिहासकारों की भी अनेक रचनाएं इस काल में लिखी गई। इनमें निजामुद्दीन बख्शी की "तबकाते अकबरी", हिन्दु खां फरिश्ता की "गुलशने इब्राहिमी," अब्दुल कादिर बदायूनी की "मुन्तखाबुत्तवारीख," मुहम्मद सालेह की "अमले सालेह" और खफी खां की "मुन्तखाबुल्लुबाब" अधिक प्रसिद्ध हैं। "तबकाते अकबरी" भारत के सामान्य इतिहास की कहानी प्रस्तुत करती है।

दरबारी इतिहासकारों और सामान्य इतिहासकारों की रचनाओं की यदि तुलना की जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि दरबारी रचनाएं मुख्यतः प्रशस्ति के रुप में हैं जबकि सामान्य रचनाओं में शासकों की आलोचना भी की गई है।

मुगलकाल में क्षेत्रीय राज्यों के शासकों द्वारा भी अपने राज्यों का वृहत इतिहास लिखवाया गया और फारसी भाषा के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं में भी रचनाएं लिखी गई। फारसी भाषा की रचनाओं में एक उल्लेखनीय नाम अली मोहम्मद खां की "मीरात अहमदी" है। एक अन्य रचना मिर्जा मासूम अक्करी की "तारीखे सिंध" है। पूर्वी भारत में बंगाल के इतिहास के लिए गुलाम हुसैन की रचना "रियाजु-स-लातीन" है जो बंगाल के स्वतंत्र सुल्तानों का इतिहास प्रस्तुत करती है। दक्षिण भारत के लिए ऐसी ही एक रचना रफीउद्दीन शीराजी की "तजकिरतुल मुलूक" है जिसमें बीजापुर के शासकों का इतिहास वर्णित है। इसी प्रकार कश्मीर के इतिहास से संबंधित रचनाएं भी उपलब्ध है, जिसमें मुख्य रुप से हैदर मलिक की रचना "तारीखे कश्मीर" भी उपलब्ध है। क्षेत्रीय भाषा की रचनाओं में राजस्थानी भाषा में लिखित "ख्यात" उल्लेखनीय है। इसका संबंध राजपूताना के राज्यों और अकेशासकों के इतिहास से है। पूर्वोत्तर क्षेत्र के इतिहास के लिए असामिया भाषा में लिखित "बुरंजीयां" एक मूल्यवान स्त्रोत है। यह पुस्तक दरबारी सरक्षण में लिखी गई। इसमें तेरहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक अहम शासकों का इतिहास वर्णित है। मराठो के इतिहास के अध्ययन के लिए प्रमुख स्त्रोत "बखार" के रुप में हैं। इसमें कुछ शिवाजी के शासनकाल से संबंध रखते हैं और कुछ पेशवाओं की सत्ता का इतिहास प्रस्तुत करते हैं। एक और रचना "शकावली" है।

उस समय मुगल सामंतों द्वारा अपने जीवन-वृतांत के संकलन तैयार कराए गए। इसमें सबसे महत्वपूर्ण रचना अब्दुल बाकी निहावन्दी की "मासिरे रहीमी" है। अकबर के प्रमुख अब्दुर्रहीम खानखाना के संरक्षण में लिखी गई इस रचना में अब्दुर्रहीम के पूर्वजों का वर्णन है और उसकी व्यक्तिगत उपलब्धियों के साथ-साथ उसके दरबार से संबद्ध विद्वानों और कलाकारों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। जहांगीर के काल के प्रमुख सामंत खाने-जहां लोधी के जीवन-वृतांत से संबंधित रचना "तारीखे-खां-जहांनी" भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है। सामंतों के सामूहिक जीवन-वृतांत का संकलन फरीद भक्करी की रचना, "जखीरतुल खवानीन" और शाहनवाज खां की रचना "मआसिरुल उमरा" में प्रस्तुत किया गया है। अकबर और उसके उत्तरा-धिकारीयों के प्रमुख दरबारियों का यह जीवन-वृतांत मुगल सामंत वर्ग की राजनीतिक भूमिका, सामाजिक रहन-सहन और सांस्कृतिक अभिरुचियों के अध्ययन के लिए अत्यंत मूल्यवान स्रोत है।

अबुल फजल की "आइने अकबरी" के द्वारा मुगलकालीन शासन प्रणाली पर विस्तृत जानकारी मिलती है। अकबरनामा से भी उस समय की शासन व्यवस्था का ज्ञान होता है। शाह-जहां और औरंगजेब के शासनकाल के लिए प्रशासनिक संहिताओं के कई संकलन उपलब्ध हैं जिन्हें 'दस्तुरुल अमल" कहा जाता है।

मुगल शासक द्वारा विभिन्न प्रांतो और विभागों में प्रशासनिक गतिविधियों और अन्य महत्वपूर्ण विषयों के संबंध में नियमित रुप से सूचना प्राप्त करने के लिए संदेशवाहक बहाल किएगए थे। इनके द्वारा प्रस्तुत सुचनाएं "अखबार" के रुप में उपलब्ध हैं। सामूहिक रुप से यह "अखबाराते दरबारे मुअल्ला" मुगलकालीन प्रशासन को समझने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

सूफी संतों से संबंधित साहित्य भी ऐतिहासिक स्रोत के रूप में मूल्यवान है। प्रसिद्ध सूफी संत हजरत गौस गवालयरी की जीवनी "मनाकिबे गौसिया" शाह फ़ज़ल शत्तारी ने लिखी। शेख जमाल ने "सियरुल आरेफीन" में हुमायूं के समकालीन अनेक संतो और धर्माचार्यों के जीवन-वृतांत प्रस्तुत किए। दाराशिकोह की 'सफीनतुल औलिया' और शेख अब्दुलहक देहलवी की रचना 'अख्बारुल अख्यार' भी महत्त्वपूर्ण रचना है।

इन जीवनियों के अतिरिक्त सूफियों से संबंधित अन्य रचनाएं भी है। इनमें सूफी सिद्धांतों और संस्कारों से संबंधित अनेक रचनाएं हैं जिन्हें विभिन्न संतो ने समय-समय पर लिखा। एक अन्य रचना 'मकतूबात' की श्रेणी में आती है। यह सूफी संतो द्वारा लिखे गए पत्रों का संकलन है। सूफी रचनाओं के माध्यम से भी सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन अध्ययन सुगम हो जाता है। तिथि से संबंधित जानकारी में सूफी रचनाएं बड़ी सहायक सिद्ध हुई।

मुगलकालीन साहित्यिक स्रोत में विदेशी यात्रियों का भी योगदान अत्यधिक रहा। 1579 ई. में अकबर के निमंत्रण पर कुछ जेसुई पादरी अकबर के दरबार में आए। उनका प्रधान फादर मौनसेरट था। अकबर ने उन पादरियों से धार्मिक विचारों के साथ-साथ दर्शन और विज्ञान पर भी विचार-विमर्श किया। फादर मौनसेरट ने अपने अनुभवों को "commentarius" नामक रचना में प्रस्तुत किया। लैटिन भाषा में लिखी इस रचना से अकबर की धार्मिक नीति पर प्रकाश पड़ता है इसके अतिरिक्त दरबार के सामाजिक जीवन और राजनीतिक घटनाओं पर भी सूचना इसके माध्यम से मिलती है। दो अन्य शिष्टमंडल जेसुई पादरियों द्वारा मुगल दरबार में भेजे गए जिनमें अंतिम शिष्ट मंडल जहांगीर के समय तक दरबार में रहा। 1612 ई. में मैनरिक नामक यात्री ईसाई धर्म के प्रचार के लिए भारत आया। उसने सिंध से बंगाल तक यात्रा

की और इसका वृतांत लिखा।

अंग्रेज यात्रियों में पहला, व्यक्ति रैल्फ फिच था। वह अकबर के दरबार में आया। वहाँ से उसने बंगाल तक यात्रा की। अपने यात्रा-वृतांत में उसने भारत के साथ व्यापार की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। भारत के सामाजिक जीवन और रीति-रिवाजों पर भी उसने टिप्पणी की है। अंग्रेज यात्रियों में एक अन्य महत्वपूर्ण नाम कैप्टन विलियम हॉकिन्स का था। वह 1608 से 1613 के बीच जहांगीर के दरबार में रहा। वह जहांगीर से इंग्लैंड की ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए मुगल साम्राज्य में व्यापार की सुविधा प्राप्त करने को इच्छुक था परन्तु उसे इस काम में सफलता नहीं मिली। हाकिन्स का एक अन्य सहयोगी यात्री विलियम फिन्च था। उसने पंजाब और व्याना क्षेत्र की ओर अपने अनुभवों को संकलित किया। 17वीं शताब्दी में टामस कोयार्ड नामक यात्रि जहांगीर के दरबार में आया। उसका यात्रा वृतांत तो सुरक्षित नहीं रह सका किन्तु उसके कुछ पत्र उपलब्ध हैं जिनमें जहांगीर के चरित्र और व्यक्तित्व पर मनोरंजक टिप्पणियाँ हैं। जहांगीर के ही दरबार में इंग्लैंड का राजदूत सर टॉमस रो भारत आया। उसके साथ उसका सह-योगी एडवर्ड टेरी था जिसने अपने यात्रा वृतांत में मुगल साम्राज्य का विस्तृत वर्णन किया। टामस के पत्रों में भी मुगल दरबार के जीवन और नूरजहाँ के दरबार में प्रभाव का वर्णन है। जहांगीर के ही दरबार में एक और महत्वपूर्ण यात्री पेल्सर्ट था जो हालैंड का निवासी था। उसने अपनी रचना Remonstrate में अपने व्यापार संबंधी बातों का मुख्य रुप से उल्लेख किया है। इसी रचना पर आधारित डीलाएट की रचना Do imperio Magni Mogulis (महान मुगल का साम्राज्य) भी मुगलकालीन इतिहास विशेषकर आर्थिक जीवन के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत मानी जाती है।

शाहजहां के शासनकाल में एक जर्मन यात्री मैंडेस्लो मुगल साम्राज्य की यात्रा पर आया। इसी काल में एक फ्रांसिसी यात्री तैवर्निय थेवेनो और बर्नियर का भी आगमन हुआ। तैवर्निय का यात्रा वृतांत 'Six Voyages' के नाम से प्रकाशित हुआ। इसमें मुख्य रुप से व्यापार और हस्तशिल्प उत्पादन का वर्णन किया गया हैं। थेवेनो औरंगजेब के शासनकाल में भारत से लौटा। उसने भी मुख्य रुप से आर्थिक विषयों का वर्णन किया हैं। बर्नियर का वृतांत ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसमें उत्तराधिकार के युद्ध का विस्तृत वर्णन हैं।

इसी काल में इंग्लैंड के दो यात्री पीटर मुंडी और जान मार्शल भी मुगल साम्राज्य में आये। इन्होंने भी अपनी पुस्तकों में यहां के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन पर, विशेषकर व्यापार संबंधी बातों का उल्लेख किया हैं। शाहजहां के शासन के अंतिम दिनों में वेनिस (इटली) का निवासी मनूची भी मुगल दरबार में आया। उसकी रचना 'Storia la Mogor' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

यूरोपीय व्यापारी कंपनियों के Factory Records भी एक मूल्यवान ऐतिहासिक स्रोत हैं। इनमें आर्थिक मामलों पर विशेषकर प्रचलित मूल्यों, विभिन्न उत्पादनों, शिल्पों परिवहन के दरों, व्यापार पर लगनेवाली चुंगी आदि के संबंध में विश्वसनीय आंकड़े मिलते हैं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि मुगलकालीन ऐतिहासिक वृतांत एंव इतिहास लेखन की कला ने आज भी मुगलकालीन युग को जीवित रखा हैं।

—×—